an>

Title: Need to stop printing of currency notes of higher denominations.

श्री रोड़मल नागर (राजगढ़) : अध्यक्ष महोदया, आपने मुझे एक महत्वपूर्ण विषय उठाने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं। ...(व्यवधान)

आज हमारा देश विभिन्न प्रकार की समस्याओं से जूझ रहा है। चाहे आतंकवाद हो, चाहे नक्सलवाद हो या ड्रग्स जैसी तस्करी की समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है। इन गंभीर समस्याओं के खात्मे के लिए हमारी सरकार प्रतिवÂर्ष हजारों करोड़ रूपए खर्च कर रही है। ...(व्यवधान)

12.17 hours

(Shri Mallikarjun Kharge and some other hon. Members then left the House.)

वहीं दूसरी ओर बड़े नोट छापकर इन समस्याओं को जीवनदान भी दे रही है। दूसरे शब्दों में कहें तो इन सारी समस्याओं की जड़ में बड़े नोट भी हैं, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज हमारे देश में 90 प्रतिशत नोट 500 और 1000 रुपए के छापे जा रहे हैं। बड़े नोटों का आसानी से गैरकानूनी इस्तेमाल इस देश में देश विरोधी गतिविधियों को फलने फूलने में किया जा रहा है। 500 और 1000 रुपए के नोटों या यह कहें कि बड़े नोटों की वजह से भ्रÂष्टाचार और देश की सुरक्षा पर गंभीर संकट पैदा हो गया है। बड़े नोटों के छपने की वजह से राÂष्ट्र विरोधी तत्वों द्वारा जाली नोटों का भी कारोबार बड़े पैमाने पर हो रहा है, जो हमारे देश के लिए एक बड़ी समस्या का रूप धारण करता जा रहा है। आज हम देखते हैं कि जितने भी विकसित देश हैं, वहां बड़े नोट बहुत कम दिखाई देते हैं।

एडगर फिज ने कहा है कि एक तरफ तो सरकार देश के विकास के लिए टैक्स को ज्यादा से ज्यादा वसूलने की ओर ध्यान देती है, वहीं दूसरी ओर बड़े नोट छापती है जो देश में टैक्स चोरी का बड़ा साधन बनता है, यह अपने आप में एक समस्या है।

इसलिए माननीय अध्यक्ष महोदया, मैं आपके माध्यम से सरकार से आग्रह करता हूं कि राÂष्ट्रहित में जल्द से जल्द बड़े नोटों की छपाई कम की जाए, जिससे देश के अंदर व्याप्त भ्रÂष्टाचार, नक्सलवाद, आतंकवाद, तस्करी जैसी गंभीर समस्याओं पर नियंत्रण किया जा सके।

माननीय अध्यक्ष :

कुँवर पुÂष्पेन्द्र सिंह चन्देल,

श्री चन्द्र प्रकाश जोशी,

श्री सुधीर गुप्ता,

श्री पी.पी.चौधरी,

डॉ. मनोज राजोरिया,

श्री भैरों प्रसाद मिश्र और

श्री रवीन्द्र कुमार जेना को श्री रोड़मल नागर द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।